Detachable/वियोज्य

HPAS (Main)-2017
HINDI
हिंदी

समय : तीन घंटे | अधिकतम अंक : 100

Time Allowed : Three Hours | Maximum Marks : 100

प्रश्न-पत्र के लिए विशिष्ट अनुदेश

निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को, प्रश्नों के उत्तर देने से पहले, ध्यानपूर्वक पढ़ लें।

1. इस प्रश्न-पत्र में **सात** प्रश्न हैं। कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। प्रश्न क्रमांक **1** और **2** अनिवार्य हैं। शेष प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिये। **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं।
2. परीक्षार्थियों को प्रश्न/प्रश्न के भाग के उत्तर खंड में दिए गये निर्देशों के अनुसार ही देने होंगे।
3. प्रत्येक प्रश्न/प्रश्न के भाग के अधिकतम अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. एक प्रश्न के सभी भागों के उत्तर, प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में उनके नियत स्थान पर लिखे जाने चाहिए। प्रश्नों/प्रश्न के भाग के उत्तर अनुक्रमवार गिने जायेंगे।
5. अगर उत्तर काटा नहीं गया है, तो आंशिक उत्तर देने पर भी उसे गिना जायेगा। यदि प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में कोई पृष्ठ या भाग खाली छोड़ दिया गया है, उसे लकीर खींचकर स्पष्टत: काट देना आवश्यक है।
6. उम्मीदवारों को स्पष्ट, सुपाठ्य और संक्षिप्त उत्तर लिखना और शब्द सीमाओं का पालन करना आवश्यक है, जहाँ कहीं भी संकेत दिया गया हो। शब्द सीमा का पालन न करने पर दंडित किया जा सकता है।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions.

1. This question paper contains *seven* questions. Attempt any *five* questions. Question Nos. **1** and **2** are compulsory. Attempt any *three* questions from the remaining five questions. *All* questions carry equal marks.
2. Candidates should attempt questions/parts as per the instructions given in the section.
3. The number of marks carried by the question/part is indicated against it.
4. All parts of a question shall be attempted at the place designated for them in the Question-cum-answer Booklet. Attempts of part/questions shall be counted in sequential order.
5. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
6. Candidates are required to write clear, legible and concise answers and to adhere to word limits, wherever indicated. Failure to adhere to word limit may be penalized.

1. निम्नलिखित अंग्रेजी अवतरण का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 20

A theory closely linked to the concept of Sarvodaya, also developed by Gandhi, is that of Trusteeship. Its fundamental objective is to create non-violent and non-exploitative property relationships. Gandhi believed that the concepts of possession and private property were sources of violence, and in contradiction with the Divine reality that all wealth belongs to all people. However, he recognized that the concept of ownership would not wither easily, nor would the wealthy be easily persuaded to share their wealth. Therefore a compromise was to encourage the wealthy to hold their wealth in trust, to use themselves only what was necessary and to allow the remainder to be utilized for the benefit of the whole society which can help whole humanity. It is apparent that Gandhi's philosophy has much in common with several Western philosophies which uphold the ideal of a more just and equitable society. For example, the Gandhian social order has been described as "communism minus violence". Nevertheless, Gandhian philosophy, particularly in the Sarvodaya ideal, does contain many socialist sentiments. In fact, such an entity as Gandhian Socialism emerged in theoretical literature during the 1970s and 1980s. Gandhi's thought has been likened also to Utopian Socialism and Philosophical Anarchism, and can be compared with strands of Maoist thought though not a Western philosophy, and even Western liberal thought. However, Gandhi is incompatible with many aspects of Liberalism and is virtually entirely incompatible with the modern, intensely competitive, ecologically destructive and materialistic capitalism of the West.

अथवा

Indian society consists of people belonging to almost all kinds of religious beliefs. Every religion teaches to treat women with respect and dignity. But somehow the society has so developed that various types of ill practices, against women have become a norm since ages. For instance, sati pratha, practice of dowry, parda pratha, female infanticide, wife burning, sexual

violence, sexual harassment at workplace, domestic violence and other varied kinds of discriminatory practices. The reasons for such behaviour against women are many but the most important one are the male superiority complex and patriarchal system of society. Though to eliminate discrimination against women various constitutional and legal rights are there but in reality there is lot to be done. Several self-help groups and NGOs are working in this direction; also women themselves are breaking the societal barriers and achieving great heights in all dimensions: political, social and economic. But society as a whole has still not accepted women as being equal to men and crimes against women are still on the rise. For that to change, the society's age-old deep-rooted mind set needs to be changed through social conditioning and sensitization programmes. The concept of women empowerment not only focuses on giving women strength and skills to rise above from their miserable situation but at the same time it also stresses on the need to educate men regarding women issues and inculcating a sense of respect and duty towards women as equals.

2. (अ) निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या कीजिये : 10

विकासपरक अर्थशास्त्र के सिद्धांत दीर्घकालीन बचत, उसके निवेश और प्रौद्योगिकीय प्रगति की भूमिका के इर्द-गिर्द सूत्रबद्ध होते हैं। इस लिहाज़ से आर्थिक विज्ञान की यह शाखा सैद्धांतिक और व्यावहारिक अर्थशास्त्र का मिला-जुला रूप है। इसमें एक तरफ़ मुक्त व्यापार का रवैया अपनाते हुए बाज़ार के ज़रिये आर्थिक वृद्धि हासिल करने की कोशिश की जाती है। दूसरी ओर राष्ट्रीय सरकारों के हस्तक्षेप और आर्थिक नियोजन का सहारा लिया जाता है। इसका तीसरा पहलू है अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं द्वारा किया जाने वाला हस्तक्षेप। इन संस्थाओं में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक और अन्य क्षेत्रीय ऋणदाता बैंक शामिल हैं। इसी मिले-जुले रूप के कारण विकासपरक अर्थशास्त्र नियोक्लासिकल और मार्क्सवादी अर्थशास्त्रियों की आपसी टकराहट का अखाड़ा बना रहता है। नियोक्लासिकल तर्क ग़रीब देशों में बाज़ार की विफलता को उनकी कमज़ोरी का कारण बताता है। उसके अनुसार इन देशों को अपनी शुल्क प्रणाली, विनिमय दरें और मौद्रिक प्रणालियों में परिवर्तन करने चाहिए ताकि बाज़ारों में सुधार हो सके। मार्क्सवादी रवैया अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण अपनाते हुए पूँजीवादी शोषण को दूसरी अर्थव्यवस्थाओं के हाशिये पर रह जाने का कारण बताता

है। ज़ाहिर है कि विकासपरक अर्थशास्त्र के फ़ार्मूले विकासशील देशों में ही आज़माये जाते हैं। विश्व अर्थव्यवस्था में इन देशों को एक 'स्पेशल केस' के तौर पर देखते हुए अक्सर माना जाता है कि इनकी समस्याएँ मोटे तौर पर एक सी हैं। इस अर्थशास्त्र ने अर्थव्यवस्था में राज्य की संस्था के हस्तक्षेप के सवाल पर ख़ासी बहस को भी जन्म दिया है।

अथवा

कला अनुभूतियों का किसी इन्द्रिय-बाह्य माध्यम में रूपांतरण है। यह रूपांतरण ही वह जादू है जो अनुभूतियों को मस्तिष्क के उस स्तर से उठाकर, जहाँ वे भोगी-झेली जाती हैं, उस स्तर पर ले आता है जहाँ उनका आस्वादन किया जाता है। यह आस्वादन की प्रक्रिया कहीं पहुँच कर आनंद-सन्तोषप्रद और कहीं पहुँच कर शांतिदायिनी हो जाती है। यही भोगने-झेलने की अस्थिरता-कटुता — एक शब्द में हर मानवीय अनुभव की अपूर्णता — कला के माध्यम से वह पूर्णता प्राप्त करती है जो मनुष्य को अधिक से अधिक संतोष देती है। शोक की अनुभूति से शोक-गीत रचना, और शोक-गीत से आनंद-संतोष और शांति की उपलब्धि कर लेना विष को मधुरस बना देना है और यह कला का सबसे बड़ा चमत्कार है। जीवन है तो मनुष्य अपने को कटु-मधु अनुभूतियों के भार से विमुक्त नहीं कर सकता। पर इस भार को वहनीय और सुखद भी बना देने में सबसे अधिक योगदान कला ने दिया है। धर्म और दर्शन ने प्रायः उनसे ऊपर उठ जाने की शिक्षा दी है; कला ने उन्हें साथ लेकर चलने की। धर्म और दर्शन की बहुत दुहाई देकर भी विशिष्ट और विरले ही सुख-दुःख से ऊपर उठ सकते हैं। सामान्य मानव को कला ने ही संभाला है; कला ही उसकी जीवन-यात्रा की संगिनी रही है, सम्बल बनी है। दुःख-सुख, शोक, चिंताएँ प्रत्येक मनुष्य के जीवन में आया करती हैं और वह उन्हें झेलता हुआ कुछ टूटता, कुछ बनता है। कलाकार इन्हीं में मानवता के दुःख-सुख, शोक-चिंताओं को देख लेता है।

(ब) निम्नलिखित पद्यांश की व्याख्या कीजिये : 10

धर्म का ले लेकर जो नाम, हुआ करती बलि कर दी बंद
हमीं ने दिया शांति-संदेश, सुखी होते देकर आनंद
विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम
भिक्षु होकर रहते सम्राट, दया दिखलाते घर-घर घूम
यवन को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि
मिला था स्वर्ण-भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी सृष्टि
किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आए थे नहीं।

अथवा

वह प्रदीप जो दीख रहा है झिलमिल, दूर नहीं है;
थककर बैठ गये क्या भाई! मंजिल दूर नहीं है।
चिनगारी बन गई लहू की
बूँद गिरी जो पग से;
चमक रहे, पीछे मुड़ देखो,
चरण-चिह्न जगमग-से।
शुरू हुई आराध्य-भूमि यह,
क्लान्ति नहीं रे राही;
और नहीं तो पाँव लगे हैं,
क्यों पड़ने डगमग-से ?
बाकी होश तभी तक, जब तक जलता तूर नहीं है;
थककर बैठ गये क्या भाई! मंजिल दूर नहीं है।
अपनी हड्डी की मशाल से
हृदय चीरते तम का,
सारी रात चले तुम दुख
झेलते कुलिश निर्मम का।
एक खेय है शेष किसी विधि
पार उसे कर जाओ;
वह देखो, उस पार चमकता
है मन्दिर प्रियतम का।
आकर इतना पास फिरे, वह सच्चा शूर नहीं है,
थककर बैठ गये क्या भाई! मंजिल दूर नहीं है।

3. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों में से किन्हीं **दस** का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिये : 20

(1) अंग-अंग मुसकाना

(2) कलेजे पर पत्थर रखना

(3) कान कतरना

(4) हाथों के तोते उड़ना

(5) माथा ठनकना

(6) हाथ साथ करना

(7) थोथा चना बाजे घना

(8) जिसकी लाठी उसकी भैंस

(9) साँप मरे लाठी न टूटे

(10) चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए

(11) नाच न जाने आँगन टेढ़ा

(12) न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी

(13) ऊँट के मुँह में जीरा

(14) एक अनार सौ बीमार

(15) हजामत बनाना।

4. (अ) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं **पाँच** शब्दों के उपसर्ग अलग करते हुए स्पष्ट कीजिए कि उपसर्ग के प्रयोग से मूल शब्द के अर्थ में क्या परिवर्तन हुआ है : 10

(1) अत्याचार

(2) अपहरण

(3) अनुज

(4) अध्यादेश

(5) अभ्यर्थी

(6) उपनिवेश

(7) उद्घाटन

(8) उत्कर्ष।

(ब) निम्नलिखित शब्दों के हिंदी में अर्थ लिखिए : 10

(1) Unilateral

(2) Implicit

(3) Liquidation

(4) Arbitrator

(5) Warehouse

(6) Mortgage

(7) Appointee

(8) Vocational

(9) Surveillance

(10) Obsolete.

5. (अ) निम्नलिखित अवधारणाओं में से किन्हीं **पाँच** की **एक** या **दो** वाक्यों में परिभाषा देते हुए उनका **एक-एक** उदाहरण दीजिये : 10

(1) क्रिया विशेषण

(2) भाववाचक संज्ञा

(3) कर्म वाच्य

(4) अव्यय शब्द

(5) महाप्राण ध्वनियाँ

(6) संयुक्त व्यंजन

(7) मिश्र वाक्य

(8) विस्मयबोधक।

(ब) निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए : 5

(1) खेत

(2) बहरा

(3) पाहन

(4) दूब

(5) बात।

(स) निम्नलिखित अनेकार्थ शब्दों के **दो-दो** अर्थ लिखिए : 5

(1) अंक

(2) गुरु

(3) वर्ण

(4) मान

(5) अक्षर।

6. (अ) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिये : 10

(1) मैं रविवार के दिन तुम्हारे घर आऊँगा।

(2) उसके गले में गले में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ी हैं।

(3) मैंने तेरे को कितना समझाया।

(4) क्या यह संभव हो सकता है ?

(5) सारी रात भर मैं जागता रहा।

(6) प्रत्येक देशवासियों को देश की सेवा में तन, मन, धन अर्पण करना चाहिए।

(7) तुम कक्षा में आते हो तो तुम्हारी पुस्तक साथ क्यों नहीं लाते ?

(8) अध्यापक ने आज हमारे को नया पाठ पढ़ाया।

(9) तुम यहाँ से जाइये।

(10) उस पर घड़ों पानी गिर गया।

(ब) निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध रूप लिखिए : 5

(1) अतीथि

(2) तदोपरांत

(3) प्रीक्षा

(4) कृप्या

(5) लब्धप्रतिष्ठित।

(स) निम्नलिखित शब्द-युग्मों के अर्थ लिखिए : 5

(1) सुधि-सुधी

(2) सुत-सूत

(3) वर्ण-व्रण

(4) देव-दैव

(5) पाणि-पानी।

7. (अ) निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए **एक-एक** शब्द लिखिए : 10

(1) पहले लिखे पत्र का स्मरण कराने वाला

(2) जिसकी कोई आशा न की गई हो

(3) जो चिरकाल से चला आया है

(4) दूसरों के केवल दोषों को खोजने वाला

(5) जंगल में फैलने वाली आग

(6) जो चोरी-छिपे माल लाता ले जाता हो

(7) देश-देशान्तर भ्रमण करने वाला यात्री

(8) जो पृथ्वी के भीतर का ज्ञान रखता हो

(9) किसानों से भूमि कर लेने वाला सरकारी विभाग

(10) यह स्त्री जो पढ़ी-लिखी व ज्ञानी हो।

(ब) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए : 5

(1) विरक्त

(2) द्रुत

(3) अनभिज्ञ

(4) निजी

(5) दीर्घ।

(स) निम्नलिखित के **दो-दो** समानार्थी शब्द लिखिए : 5

(1) पर्वत

(2) पृथ्वी

(3) अश्व

(4) अग्नि

(5) वसन।